

DPN 7015

जमलोक स्तुति JAMALOKA STUTI

Title :

Run. No. 7740

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 7.0 x 16.3

Folios 4

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / stain

Beginning, colophon, post-colophon :

Beg. श्रीगरुडाय नमः ॥

Folio 2. लक्ष्मीपते मधुरियो प्रसूतोत्तमाय ।

P.T. 0.

इति श्री स्कन्द पुराणे कपशी खण्डे जमलोक वनाशा नामा मोध्याय ॥

भीमशोसायनम ॥ १ ॥ दशमस्कन्धे ॥
 रम्यरारेः शकुन्तला ॥ २ ॥ दशमस्कन्धे ॥
 ॥ दशमस्कन्धे ॥ ३ ॥ दशमस्कन्धे ॥
 तायुतातिसंत ॥ ४ ॥ दशमस्कन्धे ॥
 करिपुहरे निजकन्यः वैकुण्ठके तम रिक्ते मथान्ता

श्री
 पाशो॥ भूतेषु षण्दपरिणाम्युतचरितकेला
 ॥२॥ विभोदुसिहमध्यसूदनचक्रपाशा॥ गोरि
 जने॥ दिशसंकरचक्रदु॥ नाशयरांसुरनिव
 ॥ गारं कपाये॥ श्रीगो॥ ३॥ मुचुं नयेजवि
 वमेवाराकाभसत्रः॥ कांतोपिततसंभुजनिव

१
 नां

श्री
 सौरेः उशानकृत्तिवसनाविदशैकनाथः त्याज्या
 ॥ ४॥ नश्मीपतेमथुरिपोपुरुषातमाद्यः श्रीक
 राहविजवशनसातपिनाकपाशेआनन्दकन्द
 धरनिधरपुनामः तत्तज्जा॥ ५॥ सर्वेश्वरत्रि
 पुरशुदनदेवदकः वृहन्नयदेवजरुपश्चनभा

लनेत्रः संषयानेः स्रक्षोरजो मरुतवा वसुगां क
मैलः त्याज्या ॥ ६ ॥ श्रीरामराक्षसमे श्वररावन
रैः मतेराममहारपुत्रमया विनाथः चानुरम
डशा विप्रकपते सरैः त्याज्या ॥ ७ ॥ भुवि वि
रिशरजनिशानावतंशः कदापि नासनेराज्यत

नके दिनाथः श्री भागीविशोत्रभवभूतपते पुर
रैः त्याज्या ॥ ८ ॥ गोविपते यदुपते वसुदेवसौ न
कंरपूरगौरवृषभध्वजभोजनेत्रः गोवर्धनो
धमधरिनगोपः त्याज्या ॥ ९ ॥ स्थानो त्रिचन
पिनाकधरस्मरारैः कक्षा निरुधकमलाक

५
 लक लम धारेः विश्वेश्वर त्रिपथ गा दू ज ता क
 लापः त्याजा ॥ १० ॥ अ त रा दिक स ते न सु वा
 रु ना म्ना ॥ संद भिं ता ल लि त र ता क दं व के न
 स शा य का व ध गु नां दि ज क रा ठ का याः क य
 दि मां स ज म ठा स य म न प स ॥ ११ ॥ इ थ दि जे त्र

३

५
 निज भू त्या ग नां स दै वः सं सि क्ष ये द्र व नि ज गं रा हि
 ध र्म र जः अ न्यो पि ये ह रि ह रा क ध र ध र रा यो
 : से दूर त पु न ह हो प रि वं जि नि यां ॥ मृ ग सि स
 वा च ॥ यो ध र्म र ज र ता ल लि त प र ध्याः
 ना मा व लिं श क ल क ल्म क वि ज ह त्रिः धि रो न के

दुवमृतं शशिमुषनः नित्यं जपं (सिद्धिं दि)
सनुरसं न पुन पि वे स मातु ॥१३॥ इति
सं कां धारं म्या सिद्धिं म पि वे सारं हृद
वर्जं प पुनं व द स स्वर शं पु ॥१४॥ इति
सुपु राने का सि य न ज म लो के व ना सा ना म

को धारं म्या
सिद्धिं म पि वे सारं
हृद